आक्रामक जलीय खरपतवारों का उन्मूलन

चर्चा में क्यों?

हाल ही में **साइरटोबैगस साल्विनिया नामक एक बाह्य प्रजाति के बीटल** ने मध्य प्रदेश के बैतूल ज़िले में तवा नदी पर बने **सारणी जलाशय (सतपुड़ा बाँध)** से एक **आक्रामक खरपतवार प्रजाति** [साल्विनिया मोलेस्टा](#) को सफलतापूर्वक समाप्त कर दिया है।

मुख्य बिंदु:

- जबलपुर स्थित **भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद-खरपतवार अनुसंधान निदेशालय (ICAR-DWR)** के वैज्ञानिकों ने खुलासा किया कि साइरटोबैगस साल्विनिया, एक ब्राज़ीलियाई जैव कारक जो विशेष रूप से **साल्विनिया मोलेस्टा को लक्षित करता है**, को गहन शोध और आवश्यक सरकारी अनुमोदन के बाद भारत में आयात किया गया था।

साल्विनिया मोलेस्टा (Salvinia molesta)

- यह एक **जलीय फर्न** है जो **दक्षिण-पूर्वी ब्राज़ील** में पाया जाता है। इसे विशाल साल्विनिया या करिबा खरपतवार के रूप में भी जाना जाता है क्योंकि इसने **ज़िम्बाब्वे और ज़ाम्बिया के बीच करिबा झील** के एक बड़े क्षेत्र को दूषित कर दिया था।
- साल्विनिया की विशेषताओं में **छोटे, शाखाओं वाले, तैरते हुए तने** शामिल हैं, जिनमें पत्ती की सतह पर रोम होते हैं, लेकिन **कोई मूल जड़ नहीं होती** है।
- **पत्तियाँ त्रिगुणित चक्रों में व्यवस्थित होती हैं,** जिसमें एक **पत्ती बारीक विभाजित, जड़ जैसी और लटकती हुई** होती है, जबकि **शेष अन्य दो हरी, अवृंत या छोटी-पेटियोलेट एवं सपाट** होती हैं।

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (Indian Council of Agricultural Research- ICAR)

- **यह कृषि अनुसंधान और शिक्षा विभाग (DARE), कृषि और किसान कल्याण मंत्रालय** के तहत एक स्वायत्त संगठन है।
- इसकी स्थापना **16 जुलाई, 1929** को हुई थी और इसे पहले **इंपीरियल काउंसिल ऑफ एग्रीकल्चरल रिसर्च** के नाम से जाना जाता था।
- इसका मुख्यालय **नई दिल्ली** में है।
- यह पूरे देश में बागवानी, मत्स्य पालन और पशु विज्ञान सहित कृषि में अनुसंधान तथा शिक्षा के समन्वय, मार्गदर्शन एवं प्रबंधन के लिये सर्वोच्च निकाय है।

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/eradicating-invasive-aquatic-weeds